कवि केशवदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कवि केशव के जीवन-विषयक तथ्यों का परिचय केशव के ग्रन्थों से ही मिल जाता है। इन्होंने अपना परिचय स्वयं अपने ग्रन्थों में दे दिया है। पर कुछ तथ्य ऐसे हैं जिनके विषय में विद्वानों में मतभेद रहा है। उदाहरणार्थ, केशव की जन्म तथा मृत्यु से सम्बद्ध तिथियाँ। मिश्रबन्धु, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इत्यादि विद्वानों ने केशव का जन्म विक्रम संवत 1612 के आस-पास माना है। शिवसिंह सरोज संवत 1624 वि०, लाला भगवान दीन संवत 1612 विक्रम मानते हैं। इतना असन्दिग्ध है कि वे ओरछा-नरेश इन्द्रजीत सिंह के समवयस्क थे। इन्द्रजीत सिंह का जन्म वि० सं० 1620 में हुआ था, अतः केशव का जन्म भी वि०सं० 1620 के आस-पास ही माना जा सकता है।

जन्म-तिथि की भाँति ही केशव के मृत्यु-संवत् के विषय में भी मतभेद है। आलोचकों ने अपने-अपने विभिन्न मत दिए हैं। 'जहाँगीर जसचन्द्रिका' की रचना केशवदास ने विक्रम संवत 1669 में की थी। स्पष्ट है कि कवि की मृत्यु इसके बाद ही हुई होगी।

अपने जीवन के कुछ घटनाओं का उल्लेख केशव ने अपने ग्रन्थों में किया है जिनसे उनके जन्म-स्थान, वंश, आश्रयदाता आदि के विषय में स्पष्ट पता लग जाता है। गम्भीर अध्ययन के पश्चात् पं० कृष्णशंकर शुक्ल केशव के ग्रन्थों के आधार पर ही उनका जीवन-परिचय प्रस्तुत किया है। 'कविप्रिया' में केशव ने स्वीकार किया है कि उनके पितामह कृष्णदत्त मिश्र को रुद्रप्रताप नामक राजा ने पुराण-वृत्ति पर नियुक्त किया था। केशव के पिता काशीनाथ मिश्र और बड़े भाई बलभद्र मिश्र मधुकर शाह के दरबार में थे। मधुकर शाह

रुद्रप्रताप के पुत्र थे। मधुकरशाह के पुत्र रामशाह ओरछा के राजा हुए और इन्होंने अपने छोटे भाई इन्द्रजीत के ऊपर राज्य का सारा भार डाल दिया था। केशवदास इन्हीं इन्द्रजीत के दरबार में थे। ये केशवदास का बहुत अधिक आदर करते थे —

गुरु करि मान्यो इन्द्रजित, तन मन कृपा विचारि।
ग्राम दये इक्कीस तब, ताके पाँय पखारि॥

अकबर के प्रसिद्ध दरबारी बीरबल से भी केशव का पर्याप्त परिचय था। अपनी मातृभूमि ओरछा से केशव को बहुत लगाव था। इन्द्रजीत के राज्य में केशव ने बड़े सुख से अपना जीवन ~~सुख~~ व्यतीत किया था —

भूतल को इन्द्र, इन्द्रजीत राजै जुग-जुग,
केसोदास जाके राज, राज-सो करत है।

केशव दरबारी कवि थे और दरबार की विलासितापूर्ण परिस्थियों का प्रभाव उन पर पड़ना स्वाभाविक ही था। वे बड़े रसिक थे। इन्हें बुढ़ापा पसन्द नहीं था और इसीलिए जहाँ भी इन्होंने बुढ़ापे का वर्णन किया है वहाँ उनके हृदय की वेदना ~~उसकी~~ दिखाई देती है —

कँपै उर बानि डगै बर डीठि त्वचाऽति कुचै सकुचै पति बेली।
नवै नव ग्रीव थकै गति केसव बालक के संग ही संग खेली॥

बुढ़ापे के प्रति इनकी अनिच्छा स्पष्ट दिखाई देती है। इसी अनिच्छा को देखकर पं० कृष्णशंकर शुक्ल ने लिखा है — " दर्शन इत्यादि का ~~अध्ययन~~ अध्ययन होने के कारण यद्यपि इनका ध्यान संसार की अनित्यता की ओर जाता रहता था परन्तु इनमें रसिकता इतनी अधिक थी कि वह वैराग्य इनके हृदय में जम नहीं पाता था। xxxx xxxx जब कभी ये बाहर निकलते थे तो कोई न कोई चंद्रवदनी इन्हें 'बाबा' अवश्य कह देती थी। फिर थोड़ी देर को सुमिरनी इनके हाथ से गिर पड़ती थी और यमलोक का डर भी इनके हृदय से निकल जाता था। "

~~के~~ केशव ने संस्कृत - साहित्य का

Scanned with CamScanner

गम्भीर अध्ययन किया था। अपने कुल के पाण्डित्य पर केशव को बहुत गर्व था। इसका पता उनके निम्न दोहे से चलता है —

भाषा बोलि न जानहीं, जिनके कुल के दास।
भाषा-कवि भो मंदमति, तेहि कुल केसवदास॥

कृतित्व —

केशव द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या अभी तक भली प्रकार निश्चित नहीं की जा सकी है, किन्तु सात ग्रन्थ ऐसे हैं जिन्हें केशव-रचित मानने में किसी भी विद्वान को आपत्ति या संदेह नहीं है। ये ग्रन्थ हैं — रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया, विज्ञान गीता, रतन बावनी, वीरसिंह देवचरित, जहाँगीर-जस-चन्द्रिका।

रामचन्द्रिका —

रामचन्द्रिका केशव की सर्वाधिक प्रसिद्ध पुस्तक है। इसमें राम-कथा विस्तार से कही गयी है। कहा जाता है इस ग्रंथ का कथा-प्रवाह महाकाव्य की शैली पर न होकर नाटक की संवादात्मक शैली के आधार पर हुआ है। कहा जाता है कि केशव ने रामचन्द्रिका की रचना तुलसीदास के रामचरितमानस के होड़ में की थी, किन्तु रामचरितमानस में जो महाकाव्योचित कथा का जो अविच्छिन्न प्रवाह है, वह रामचन्द्रिका में नहीं दिखता है। दरबारी कवि होने के कारण केशव को राजनीति के दाँव-पेंचों का अच्छा ज्ञान था, जिसका परिचय इस पुस्तक में मिलता है। राजनीति-वैभव का जितना अच्छा वर्णन रामचन्द्रिका में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। रामचन्द्रिका की संवाद-योजना अत्यन्त सुन्दर है। इस ग्रन्थ में प्रयुक्त अलंकार, भाषा और छन्द कृत्रिम हो गए हैं। इसका मूल कारण केशव का पाण्डित्य है। अपने पाण्डित्य-प्रकाशन के लिए उन्होंने एक-एक छन्द में अनेक अलंकारों की योजना की है। इसी प्रकार पाण्डित्य